भारत छोड़ो आन्दोलन 1942

अगस्त क्रांति

⇒ क्रिप्स मिशन मण्डल की असफलता से सभी को निराशा हुई और कांग्रेस अब तक कोई ऐसा कार्य नहीं किया था जिससे अंग्रेजो को परेशानी हो लेकिन इस समय जापान देश के द्वार पर खड़ा था तो कांग्रेस चुप कैसे रह सकती थी

⇒ गाँधी जी ने Apl 1942 में अंग्रेजो को 'सुव्यवस्थित ढंग से भारत से चले जाने की बात कही। और भारत को ईश्वर के या अराजकता के भरोसे छोड़ दें कहें।

⇒ गाँधी जी ने स्पष्ट कहे की अगर इसके परिणामस्वरूप पूर्ण अराजकता भी आ जाय तो मैं उस खतरे को उठाने के लिए तैयार हूँ।

⇒ यही बात 'भारत छोड़ो' का नारा प्रसिद्ध हो गया।

⇒ 10 मई 1942 को 'हरिजन पत्रिका' में छपा कि भारत में अंग्रेजो की उपस्थिति जापानियों को भारत पर आक्रमण का नेवता (बुलावा) है।

⇒ 14 July 1942 को वर्धा में हुई कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में गाँधी जी को आन्दोलन छेड़ने के लिए अधिकृत किया गया

⇒ गवालिया टैंक बम्बई में 8 Aug 1942 को कांग्रेस की बैठक हुई। जिसमें अंग्रेजो से भारत छोड़ने और एक कामचलाऊ सरकार गठन की बात कही गई। और भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया गया।

रोचक जानकारी :- विरोधियों को चुनौती देते हुए गाँधी जी ने कहा कि "यदि संघर्ष का यह प्रस्ताव नहीं स्वीकार किया गया तो मैं एक मुट्ठी बालू से ही कांग्रेस से भी बड़ा आन्दोलन खड़ा कर दूँगा।"

Scanned with CamScanner

मुख्य घोषणा :-

* भारत में ब्रिटिश शासन को तुरन्त समाप्त किया जाए
* स्वतंत्र भारत सभी प्रकार की फासीवाद एंव साम्राज्यवादी शक्तियों से स्वयं की रक्षा करेगा तथा अपनी ~~अखण्ड~~ अखण्डता को बनाये रखेगा।
* अंग्रेजो की वापसी के बाद कुछ समय के लिए अस्थायी सरकार की स्थापना की जाएगी।
* गाँधी के नेतृत्व में आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया गया।
* इस बैठक में वर्धा प्रस्ताव की पुष्टि की गई।

आन्दोलन का मुख्य कारण :

* क्रिप्स मिशन की असफलता
* जापानी आक्रमण का भय
* युद्ध से भारत की आर्थिक स्थिति खराब हो रही थी
* ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति बढ़ती अविश्वास
* बढ़ती मांगे एंव खाद्यान्न की काला बाजारी और मुनाफाखोरी
* बंगाल में सभी नावों को जब्त कर नष्ट करने का आदेश

विरोध → अम्बेडकर एंव एंथोनी के नेतृत्व वाली एंग्लो-इण्डियन समाज ने भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया।

→ साम्यवादियों ने आन्दोलन का साथ नहीं दिया क्योंकि साम्यवादी रूस ब्रिटेन की ओर से लड़ रही थी।

Scanned with CamScanner

गांधी जी द्वारा दिये गये निर्देश :

⇒ गांधी जी ने आन्दोलन से पहले समाज के सभी वर्गों को निर्देश दिया :-

सरकारी सेवक :- कर्मचारी नौकरी न छोड़ें किन्तु कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखें।

सैनिक :- सेना से त्यागपत्र न दे लेकिन अपने देशवासियों पर गोली चलाने से इन्कार कर दें।

छात्र :- छात्र पढ़ाई तभी छोड़े जब स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने तक अपने इस निर्णय पर दृढ़ रह सकें।

कृषक :- यदि जमींदार सरकार विरोधी हो तो उसे तय किया गया लगान अदा करते रहें और अगर जमींदार सरकार समर्थक हो तो उसे लगान न दें।

राजा-महाराजा :- भारतीय जनता की प्रभुता स्वीकार करें एवं उनकी रियासतों में रहने वाली जनता अपने को भारतीय राष्ट्र का अंग घोषित कर दें।

रोचक तथ्य :- इस अवसर पर गांधी जी ने लोगों से कहा था 'एक मंत्र है, छोटा सा मंत्र, जो मैं आपको देता हूँ। यह मंत्र है → 'करो या मरो' → या तो हम भारत को आजाद करायेंगे या इस प्रयास में अपनी जान दे देंगे।

आन्दोलन का प्रसार :-

⇒ 8 Aug 1942 को बैठक देर रात्री तक चली भारत छोड़ो आन्दोलन यहीं से शुरू कर दिया गया। लेकिन यह खबर अँग्रेजी सरकार को मिल चुकी थी।

⇒ अगले दिन सुबह 9 Aug 1942 को 'आपरेशन जीरो आवर' के

Scanned with CamScanner

के तहत लगभग सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

⇒ महात्मा गाँधी, कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडु, भूलाभाई देसाई को गिरफ्तार कर पूना के आगा खाँ पैलेस में नजरबंद कर दिया गया।

⇒ गोविन्द बल्लभ भाई पंत को गिरफ्तार कर अहमदनगर के किले में रखा गया।

⇒ जवाहरलाल नेहरू को अल्मोड़ा जेल में, राजेन्द्र प्रसाद को बांकीपुर तथा मौलाना A. K. आजाद को बांकुड़ा जेल में रखा गया।

Note :- ग्वालियर टैंक मैदान को अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना जाता है।

⇒ बड़े नाताओं की गिरफ्तारी से आन्दोलन नेतृत्वविहीन हो गया। परिणामस्वरूप आन्दोलन एक जनविद्रोह के रूप में विकसीत हुआ। अत्यन्त विशाल स्तर पर एक जन उभार आया जिसने ब्रिटिश राज्य के अस्तित्व को हिला कर रख दिया।

जन विद्रोह के रूप में :-

⇒ जनता नेतृत्व विहिन होने के बाद जनता ने सरकारी सत्ता के प्रतीकों पर आक्रमण किया तथा सरकारी भवनों पर बलपूर्वक तिरंगा फहराया। सत्याग्रहियों ने अपनी गिरफ्तारियाँ दीं। पुल उड़ा दिये। रेलों की पटरियाँ उखाड़ दी गयी। तार एवं टेलीफोन की लाइनें काट दी गयी। छात्रों ने जुलूस निकाले वे गैर कानूनी पर्चा लिखकर जगह-जगह बांटने लगे और भूमिगत कार्यकर्ताओं के लिए संदेहवाहक कार्य किये।

Scanned with CamScanner

भारत छोड़ो आन्दोलन मोटे तौर पर स्पष्ट रूप से तीन चरण दिखाई देता है:-

⇒ पहले चरण में आन्दोलन व्यापक और हिंसक था। जिसे शीघ्र ही दबा दिया गया। इसमें मुख्य भूमिका शहरों की थी।

⇒ 9 Aug – 14 Aug तक बम्बई इस तूफान का मुख्य केन्द्र था।

⇒ 10 Aug – 14 Aug तक कलकत्ता में हड़ताले रही

⇒ दिल्ली भी इस दौरान हिंसक का केन्द्र रहा।

⇒ पटना में 11 Aug को सचिवालय के सामने जब ईस्ट मुठभेड़ हुई और दो तीन दिन तक सरकार का नियंत्रण ही समाप्त हो गया

⇒ 20 Aug – 2 Sep तक (13 दिन) टाटा स्टील प्लांट पूरी तरह बंद रहा। और मजदूर नारा लगा रहे थे कि काम पर तबतक नहीं लौटेंगे जब तक राष्ट्रीय सरकार नहीं बन जाती।

⇒ अहमदाबाद में कपड़ा मिलों की हड़ताल साढ़े तीन माह तक चली।

Note:- अहमदाबाद के बारे में लिखा कि यह शहर भारत का 'स्टालिनग्राद' बन गया।

⇒ अगस्त के मध्य में ही आन्दोलन का केन्द्र शहर से बदलकर ग्रामीण हो चुका था।

⇒ बनारस, पटना, और कटक जैसे केन्द्रों से विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों में फैल गए। और कृषक विद्रोह का नेतृत्व किया।

उनके नारे थे – थाना जलाव, स्टेशन फूंक दो, अंग्रेजो भारत छोड़ो

रोचक तथ्य :- बिहार का तिरहुत देश के भाग से कटा रहा और वहाँ दो सप्ताह तक सरकार का नामों-निशान तक न था।

⇒ इस चरण में विद्रोह के महत्वपूर्ण केन्द्र आजमगढ़, बलिया और गोरखपुर तथा बिहार में गया, भागलपुर, सारन, पूर्णिया, शाहाबाद मुजफ्फरपुर और चम्पारन था।

Scanned with CamScanner

=> अंग्रेजी सरकार ने इस आन्दोलन को दबाने के लिए क्रूर व्यवहार को अपनाया।

=> लोगों के भीड़ पर पुलिस और सेना को गोली चलाने का आदेश दे दिया गया।

=> हवाई जहाजों से उन पर मशीनगन चलाई गई। ग्रामीणों पर 90 लाख का सामुहिक कर लगाया गया। कई गाँव जला दिए।

=> 1942 के अन्त तक लगभग 60,000 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी थी।

=> सरकार लगभग दो माह के अन्दर जन आन्दोलन को कुचलने में सफल हो गया।

भूमिगत आन्दोलन

=> जैसे-जैसे जन आन्दोलन कमजोर पड़ता गया इसी बीच देश के विभिन्न हिस्सों में भूमिगत आन्दोलनकारी गतिविधियों के जाल को मजबूत किया जा रहा था।

=> इस आन्दोलन का अन्जाम मुख्यतया समाजवादी, फारवर्ड ब्लाक के सदस्य, गाँधी आश्रम के अनुयायी तथा क्रांतिकारियों ने दिया।

क्षेत्र :- बम्बई, पूना, सतारा, बड़ौदा, गुजरात, कर्नाटक केरल, आन्ध्र प्रदेश, संयुक्त प्रान्त, बिहार एवं दिल्ली।

व्यक्ति :- राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, बीजू पटनायक, छोटू भाई, अच्युत पटवर्धन, सुचेता कृपलानी R.P. गोयन्का।

=> उषा मेहता ने बम्बई में भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना की

Scanned with CamScanner

5 Nov 1942 को जयप्रकाश नारायण अपने 5 साथियों के साथ हजारीबाग (झारखण्ड) सेन्ट्रल जेल की दीवार फाँदकर फरार हो गया। और एक केन्द्रीय संग्राम समिति का गठन किया

⇒ बिहार एवं नेपाल सीमा पर J.P. नारायण तथा रामानंद मिश्र ने समानान्तर सरकार का गठन किया।

रोचक जानकारी :- सुमित मुखर्जी ने अच्युत पटवर्द्धन को ~~रोज नया~~ रोज एक नया कार देती थी

⇒ भूमिगत आन्दोलन चलाने वालों को सभी प्रकार के लोगों का सहायता मिली।

⇒ 1942 में बाबू भाई और उषा मेहता पकड़े गए 4 वर्षों की सजा हुई।

⇒ गाँधी जी ने सरकारी दमन के विरोध में 10 Feb 1943 को 21 दिनों के लिए जेल में उपवास की घोषणा कर दिए।

⇒ यह खबर देश में आग की तरह फैल गई।

⇒ वायसराय की कार्यकारिणी के तीन सदस्य M.S. अणे, N.R. सरकार और H.P मोदी ने गाँधी के रिहाई के प्रश्न पर इस्तीफा दे दिया।

⇒ 3 मार्च 1943 को भूख हड़ताल समाप्त कर दिया। और 6 मई 1943 को गाँधी जी को जेल से रिहा किया गया।

समानांतर सरकार की गठन

⇒ पहली समानांतर सरकार की गठन बलिया में चितू पाण्डेय के नेतृत्व में किया गया। (Aug 1942 केवल एक सप्ताह के लिए)

~~समान~~ इस सरकार ने स्थानिय जिलाधिकारी से शासन के सभी अधिकार छीन लिये तथा जेल में बंद सभी कांग्रेस नेताओं को रिहा कर दिया।

Scanned with CamScanner

⇒ तामलुक (बंगाल के मिदनापुर जिले): 17 Dec 1942 को जातिय सरकार बनी जो Sep 1944 तक चली।

- जातिय सरकार ने तुफान पीड़ितों को राहत पहुँचाने का कार्य सम्भाला, स्कूलो को अनुदान दिए एक सशस्त्र विद्युत वाहिनी का गठन किया।
- न्याय पंचायत की स्थापना
- धनी लोगो के अतिरिक्त धन को गरीबों में बांट दिया।

सतारा :- (1943 - 1945) यहाँ सबसे अधिक दिनों तक सरकार चली। यहाँ ~~प्रतिक्रिय~~ 'प्रति सरकार' के नाम से ~~समान्तर~~ समानांतर सरकार की गठन हुई।

- सरकार गठन में Y. B. चव्हाण तथा नाना पाटिल की प्रमुख भूमिका रही।
- ग्रामीण पुस्तकालयों की स्थापना न्यायदान मण्डलों का गठन शराब बंदी अभियान तथा गाँधी विवाहों का आयोजन किया।

Note:- आन्दोलन की जांच के लिए नियुक्त जाँच कमीशन के प्रमुख - टी. विकेडेन (ICS) मध्य प्रान्त के जज थे। अपनी रिपोर्ट 29 Nov 1943 को सौंपी।

आन्दोलन में जनता की भागीदारी

युवक :- मुख्यरूप से स्कूल एंव कॉलेज के छात्रों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया उसका योगदान भूमिगत आन्दोलन में और बढ़ गई।

महिलाएँ :- महिलाओं का योगदान सराहनीय था जैसे अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी उषा मेहता etc.

किसान :- इस आन्दोलन की जान किसान थी। किसान चाहे अमीर हो या गरीब सभी ने भागीदारी निभाई।

Scanned with CamScanner

यहाँ तक कि कुछ जमींदारों ने भी इस आन्दोलन में भाग लिया। विशेषकर दरभंगा के राजा,

⇒ बंगाल (मिदनापुर), बिहार, महाराष्ट्र (सतारा), आन्ध्र प्रदेश U.P. गुजरात, केरल किसानों की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र रहा था।

सरकारी अधिकारी :- कर्मचारी लोगों का योगदान सराहनीय था

मुसलमान :- भूमिगत आन्दोलनकारियों को प्रश्रय देने का काम

ध्यान रखें: आन्दोलन के दौरान साम्प्रदायिक हिंसा का नामो निशान नहीं था।

कम्युनिस्ट :- इसका निर्णय आन्दोलन का बहिष्कार करना था फिर भी स्थानीय स्तर पर सैकड़ो कम्युनिस्टों ने भाग लिया।

देशी रियासत :- सहयोग सामान्य था।

टिप्पणी :

चर्चिल — जब हम दुनिया में हर जगह जीत रहे, तो ऐसे वक्त में हम एक कम्बख्त बूढ़े के सामने कैसे झुक सकते हैं, जो हमेशा हमारा दुश्मन रहा है।"

लिनलिथगो → 1857 के बाद का सबसे भयंकर विद्रोह बतलाया।

उसने चर्चिल को पत्र लिखा :- मैं यहाँ 1857 के बाद बहुत गम्भीर विद्रोह से जूझ रहा हूँ, इसकी गहनता और विस्तार को मैंने सुरक्षा की दृष्टि से विश्व से अबतक छुपाया।"

अम्बेदकर — "कानून और व्यवस्था को कमजोर करना पागलपन है जब कि दुश्मन हमारी सीमा पर है।"

Scanned with CamScanner